



सोलह सोमवार व्रत कथा

सोमवार व्रत कथा का बहुत महत्व है। कहते हैं कि सोमवार व्रत कथा विधि पूर्वक करें, तो भगवान शिव व माता पार्वती की कृपा सहज ही प्राप्त हो जाती है। आवश्यकता है तो सच्चे मन से इस व्रत को करने की। सोमवार की कथा अनेकानेक पुण्य देने वाली है। इसके पाठ से सभी पापों का नाश निश्चित माना गया है। पढ़ें सोमवार व्रत कथा हिंदी में—

सोमवार व्रत कथा विधि व नियम

सोमवार का व्रत साधारणतया दिन के तीसरे पहर तक होता है। प्रति सोमवार व्रत विधि में फलाहार या पारण का कोई खास नियम नहीं है किन्तु यह आवश्यक है कि दिन रात में केवल एक समय भोजन करें। सोमवार के व्रत में शिव तथा पार्वती का पूजन करना चाहिए। सोमवार के व्रत तीन प्रकार के हैं - साधारण प्रति सोमवार, सौम्य प्रदोष और सोलह सोमवार विधि तीनों की एक जैसी है। शिव पूजन के पश्चात् कथा सुननी चाहिए। प्रदोष व्रत सोलह सोमवार कथा तीनों की अलग-अलग हैं जिनका लिंक पीछे दिया जा चुका है।

सोमवार व्रत कथा

सोमवार की व्रत कथा जीवन में सभी इच्छित वस्तुएँ देने वाली है। जो व्यक्ति श्रद्धा-भक्ति से परिपूर्ण होकर सोमवार व्रत कथा का पाठ करता है, उसके लिए जीवन में कुछ भी दुर्लभ नहीं रह जाता है।

एक बहुत धनवान साहूकार था, जिसके घर धन आदि किसी प्रकार की कमी नहीं थी। परन्तु उसको एक दुःख था कि उसके कोई पुत्र नहीं था। वह इसी चिन्ता में रात-दिन रहता था। वह पुत्र की कामना के लिए प्रति सोमवार को शिवजी का व्रत और पूजन किया करता था तथा सायंकाल को [शिव मन्दिर](#) में जाकर शिवजी के श्री विग्रह के सामने दीपक जलाया करता था। उसके इस भक्तिभाव को देखकर एक समय श्री [पार्वतीजी](#) ने शिवजी महाराज से कहा कि महाराज, यह साहूकार आप का अनन्य भक्त है और सदैव आपका व्रत और पूजन बड़ी श्रद्धा से करता है। इसकी मनोकामना पूर्ण करनी चाहिए।

शिवजी ने कहा, "हे पार्वती! यह संसार कर्मक्षेत्र है। जैसे किसान खेत में जैसा बीज बोता है वैसा ही फल काटता है। उसी तरह इस संसार में जैसा कर्म करते हैं वैसा ही फल भोगते हैं।" पार्वती जी ने अत्यंत आग्रह से कहा-"महाराज! जब यह आपका अनन्य भक्त है और इसको अगर किसी प्रकार का दुःख है तो उसको अवश्य दूर करना चाहिए क्योंकि आप सदैव अपने भक्तों पर दयालु होते हैं और उनके दुःखों को दूर

करते हैं। यदि आप ऐसा नहीं करेंगे तो मनुष्य आपकी सेवा तथा व्रत क्यों करेंगे।"

पार्वती जी का ऐसा आग्रह देख शिवजी महाराज कहने लगे-"हे पार्वती! इसके कोई पुत्र नहीं है इसी चिन्ता में यह अति दुःखी रहता है। इसके भाग्य में पुत्र न होने पर भी मैं इसको पुत्र की प्राप्ति का वर देता हूँ। परन्तु यह पुत्र केवल बारह वर्ष तक जीवित रहेगा। इसके पश्चात् वह मृत्यु को प्राप्त हो जाएगा। इससे अधिक मैं और कुछ इसके लिए नहीं कर सकता।" यह सब बातें साहूकार सुन रहा था। इससे उसको न कुछ प्रसन्नता हुई और न ही कुछ दुःख हुआ। वह पहले जैसा ही शिवजी महाराज का व्रत और पूजन करता रहा। कुछ काल व्यतीत हो जाने पर साहूकार की स्त्री गर्भवती हुई और दसवें महीने उसके गर्भ से अति सुन्दर पुत्र की प्राप्ति हुई।

साहूकार के घर में बहुत खुशी मनाई गई परन्तु साहूकार ने उसकी केवल बारह वर्ष की आयु जान कोई अधिक प्रसन्नता प्रकट नहीं की और न ही किसी को भेद ही बताया। जब वह बालक ११ वर्ष का

हो गया तो उस बालक की माता ने उसके पिता से विवाह आदि के लिए कहा तो वह साहूकार कहने लगा कि अभी मैं इसका विवाह नहीं करूंगा। अपने पुत्र को काशीजी पढ़ने के लिए भेजूंगा। फिर साहूकार ने अपने साले अर्थात् बालक के मामा को बुला उसको बहुत-सा धन देकर कहा तुम इस बालक को काशी जी पढ़ने के लिये ले जाओ और रास्ते में जिस स्थान पर भी जाओ यज्ञ करते और ब्राह्मणों को भोजन कराते जाओ।

वह दोनों मामा-भानजे यज्ञ करते और ब्राह्मणों को भोजन कराते जा रहे थे। रास्ते में उनको एक शहर पड़ा। उस शहर में राजा की कन्या का विवाह था और दूसरे राजा का लड़का जो विवाह कराने के लिये बारात लेकर आया था वह एक आँख से काना था। उसके पिता को इस बात की बड़ी चिन्ता थी कि कहीं वर को देख कन्या के माता पिता विवाह में किसी प्रकार की अड़चन पैदा न कर दें।

इस कारण जब उसने अति सुन्दर सेठ के लड़के को देखा तो मन में विचार किया कि क्यों न दरवाजे के समय इस लड़के से वर का काम चलाया जाये। ऐसा विचार कर वर के पिता ने उस लड़के और मामा से बात की तो वे राजी हो गये फिर उस लड़के को वर के कपड़े पहना तथा घोड़ी पर चढ़ा दरवाजे पर ले गये और सब कार्य प्रसन्नता से पूर्ण हो गया। फिर वर के पिता ने सोचा कि यदि विवाह कार्य भी इसी लड़के से करा लिया जाये तो क्या बुराई है? ऐसा विचार कर लड़के और उसके मामा से कहा- यदि आप फेरों का और कन्यादान के काम को भी करा दें तो आपकी बड़ी कृपा होगी और मैं इसके बदले में आपको बहुत कुछ धन दूंगा तो उन्होंने स्वीकार कर लिया और विवाह कार्य भी बहुत अच्छी तरह से सम्पन्न हो गया। परन्तु जिस समय लड़का जाने लगा तो उसने राजकुमारी की चुन्दड़ी के पल्ले पर लिख दिया कि तेरा विवाह तो मेरे साथ हुआ है परन्तु जिस राजकुमार के साथ तुमको भेजेंगे वह एक आँख से काना है और मैं काशी जी पढ़ने जा रहा हूँ।

लड़के के जाने के पश्चात् उस राजकुमारी ने जब अपनी चुन्दड़ी पर ऐसा लिखा हुआ पाया तो उसने राजकुमार के साथ जाने से मना कर दिया और कहा कि यह मेरा पति नहीं है। मेरा विवाह इसके साथ नहीं हुआ है। वह तो काशी जी पढ़ने गया है। राजकुमारी के माता-पिता ने अपनी कन्या को विदा नहीं किया और बारात वापस चली गयी। उधर सेठ का लड़का और उसका मामा काशी जी पहुंच गए। वहाँ जाकर उन्होंने यज्ञ करना और लड़के ने पढ़ना शुरू कर दिया। जब लड़के की आयु बारह साल की हो गई उस दिन उन्होंने यज्ञ रचा रखा था कि लड़के ने अपने मामा से कहा-"मामाजी आज मेरी तबियत कुछ ठीक नहीं है।" मामा ने कहा-"अन्दर जाकर सो जाओ।"

लड़का अन्दर जाकर सो गया और थोड़ी देर में उसके प्राण निकल गए। जब उसके मामा ने आकर देखा तो वह मुर्दा पड़ा है तो उसको बड़ा दुःख हुआ और उसने सोचा कि अगर मैं अभी रोना पीटना मचा दूंगा तो यज्ञ का कार्य अधूरा रह जाएगा। अतः उसने जल्दी से यज्ञ का कार्य समाप्त कर ब्राह्मणों के जाने के बाद रोना-पीटना आरम्भ कर दिया। संयोगवश उसी

समय शिव-पार्वतीजी उधर से जा रहे थे।

जब उन्होंने जोर-जोर से रोने की आवाज सुनी तो पार्वती जी कहने लगीं-"महाराज! कोई दुखिया रो रहा है इसके कष्ट को दूर कीजिए।जब शिव पार्वती ने पास जाकर देखा तो वहां एक लड़का मुर्दा पड़ा था। पार्वती जी कहने लगीं महाराज यह तो उसी सेठ का लड़का है जो आपके वरदान से हुआ था।शिवजी कहने लगे "हे पार्वती! इसकी आयु इतनी थी सो यह भोग चुका।" तब पार्वती जी ने कहा-"हे महाराज! इस बालक को और आयु दो नहीं तो इसके माता-पिता तड़प-तड़प कर मर जायेंगे।" पार्वती जी के बार-बार आग्रह करने पर शिवजी ने उसको जीवन वरदान दिया और शिवजी महाराज की कृपा से लड़का जीवित हो गया। शिव-पार्वती कैलाश चले गए।

तब वह लड़का और मामा उसी प्रकार यज्ञ करते तथा ब्राह्मणों को भोजन कराते अपने घरकी ओर चल पड़े।रास्ते में वे उसी शहर में आए जहां उसका विवाहहुआ था। वहां परआकर उन्होंने यज्ञ आरंभ कर दिया तो उस लड़के के ससुर ने उसको पहचान लिया

और अपने महल में ले जाकर उसकी बड़ी खातिर की साथ ही बहुत दास-दासियों सहित आदर पूर्वक लड़की और जमाई को विदा किया।

जब वे अपने शहर के निकट आए तो मामा ने कहा मैं पहले तुम्हारे घर जाकर खबर कर आता हूँ। जब उस लड़के का मामा घर पहुंचा तो लड़के के माता-पिता घर की छत पर बैठे थे और यह प्रण कर रखा था कि यदि हमारा पुत्र सकुशल लौट आया तो हम राजी-खुशी नीचे आ जायेंगे नहीं तो छत से गिरकर अपने प्राण खो देंगे।

इतने में उस लड़के के मामा ने आकर यह समाचार दिया कि आपका पुत्र आ गया है तो उनको विश्वास नहीं आया तब उसके मामा ने शपथ पूर्वक कहा कि आपका पुत्र अपनी स्त्री के साथ बहुत सारा धन लेकर आया है तो सेठ ने आनन्द के साथ उसका स्वागत किया और बड़ी प्रसन्नता के साथ रहने लगा।

इसी प्रकार से जो कोई भी सोमवार के व्रत को धारण करता है अथवा इस सोमवार व्रत कथा को पढ़ता और सुनता है, उसकी समस्त मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।

अन्य व्रत कथाएँ

- सोमवार
- मंगलवार
- बुधवार
- बृहस्पतिवार
- गुरुवार
- शुक्रवार
- शनिवार
- रविवार व्रत कथा
- रवि प्रदोष
- प्रदोष व्रत की विधि
- सोम प्रदोष
- मंगल प्रदोष
- बुध प्रदोष
- गुरुवार प्रदोष
- शुक्र प्रदोष
- शनि प्रदोष
- वैभव लक्ष्मी
- साईं बाबा की कथा
- अहोई अष्टमी